18.07 hrs.

MOTION RE. SITUATION CAUSED FLOOD AND DRAUGHTS—*contd.*

श्री शिव नारायण (बस्ती) : अध्यक्ष महोदय, दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज्य काहू नहिं व्यापा । बराबर सात साल से हम यहां पर कहते चले आ रहें हैं कि घाघरा नदी को कंट्रोल किया जाये । उसका हिसाब बताते रहे हैं कि 80 करोड़ का खर्चा है जबकि हर साल 16 जिलों में 80 करोड़ का नुकसान हो रहा है । आज बस्ती, गोरखपुर, गोंडा, ये तमाम जिले लबालब पानी से भरे हुए हैं । हमारे जिले में रापती नदी में सात आदमी बह गये । इतना दुःखदर्द कभी देखा नहीं गया । मैं डाक्टर राव से गुजारिश करूंगा कि वे एक इंजीनियर हैं, एक्सपर्ट हैं, चीन ने अपनी नदियों को कन्ट्रोल किया और अमरीका ने अमेजन नदी को कन्ट्रोल किया – आप भी कन्ट्रोल कर सकते हैं । दुख होता है कि पब्लिक के रिप्रेजेन्टेटिव जब सही रिपोर्ट देते हैं लेकिन उन पर कोई गौर नहीं किया जाता । आप जब तक सरकारी अफसरों की रिपोर्ट के सहारे बैठे रहेंगे तब तक आप देश का कल्याण नहीं कर सकते हैं – यह बात मैं बहुत साफ साफ कहना चाहता हूं । यह गवर्नमेंट तो झगड़ों में फंसी हुई है, इसको और कुछ देखने की फुर्सत ही नहीं है । आप हवाई जहाज से घूम कर देख आये, इससे जनता का दुख नहीं मिटेगा । आज हमारे यहां वह सड़क टूट गई है जोकि भगवान बुद्ध के जन्म स्थान तक जाने वाली है ।

श्री स० मो० बनर्जी (कानपुर) : यू०पी० से सी० वी० गुप्ता को निकाला जाये ।

श्री शिव नारायण : सी०वी० गुप्ता ने कुछ तो दिया लेकिन ये जो मुफ्त के सौ गुलाम इधर बैठे हुए है वह क्या कर रहे हैं ? आज पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल में इतनी मुसीबत है लेकिन यह लोग यहां पर बैठकर मखोल करते है । इनको जनता के दुखदर्द से कोई मतलब नहीं है । इनको तो अपने गेम खेलना है । दूसरों का शंख बजाने के लिए यह यहां बैठे हुए हैं ।

श्री स० मो० बनर्जी : ये सिन्डीकेट का बैंड बजा रहे हैं ।

श्री शिव नारायण : सिन्डीकेट के दरबार में से बनर्जी साहब भी ले आते हैं । रामरत्न गुप्ता के यहां से ये भी ले आते हैं । लेकिन क्या इनको पब्लिक से कोई इन्ट्रेस्ट हैं ? ये बड़े समाजवादी और कम्युनिस्ट बनते हैं, अपने को देश का बड़ा शुभचिन्तक समझते हैं । लेकिन घबराओ नहीं, जनता तुम को भी देखेगी ।

मैंने बार बार इस सरकार को बताया कि 80 करोड़ का खर्चा है और हर साल 16 जिलों में 80 करोड़ का नुकसान हो जाता है । सरकार हिम्मत करके इतना रुपया खर्च करे । हम आपके साथ चलने को तैयार हैं । एक साल बाढ़ रुक जाये तो घाघरा और सरजू के किनारे इतनी बड़ी बड़ी जड़हन की बाल पैदा हो सकती है । हमने फूड मिनिस्टर से कहा था कि अगर आप बाढ़ कन्ट्रोल कर दो तो सिर्फ चार जिले ही सारे देश को चावल खिला सकते हैं ।

लेकिन इस सरकार के कान पर जूं नहीं रेंगती । मंत्रियों को जो अफसर लिख भेजते हैं उनकी बात को ही मान लेते हैं ।

श्री स० मो० बनर्जी : जन्तर मन्तर रोड से गप्पा जी को कहो ।

श्री शिव नारायण : हम लोग बाढ़ की मुसीबत की बात कहने आये हैं । केवल दियासलाई देने से और एक बोतल मिट्टी का तेल देने से काम नहीं चलेगा । आप वहां का मुनासिब और परमानेंट इंतजाम कीजिये । यह सरकार गरीबों की है । भगवान ने कहा है कि गरीबों की जो मदद नहीं करता है उस का कल्याण होने वाला नहीं है ।

[श्री शिव नारायण]

मैं अपने सिंचाई मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि आप अपने विषय के ऐक्सपर्ट हैं । और मंत्री तो मिडिल पास या फेल होते हैं, लेकिन आप तो एक्सपर्ट हैं इसलिए आपके ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है । अगर आप के जमाने में हमारा कल्याण नहीं हुआ तो किसी दूसरे मिनिस्टर के हाथों से कल्याण नहीं हो सकता । जो रुपया यहां से जाता है वह अगर ठीक ढंग से लगे तो काम चल सकता है । भगवान डा० सम्पूर्णानन्द की आत्मा को शान्ति दे, मैंने उनसे कहा कि बाबू जी 10 परसेंट पी० डब्बलू० डी० वाले इंजीनियर खा जाते हैं । तो उन्होंने कहा कि 10 परसेंट लेकर भी काम करें तो भी अच्छा है और काम बन सकता है । लेकिन आज तो 90 परसेंट तक खा जाते हैं । इसलिए मैं कहूंगा कि आज सरकार अपने कानों पर जूं रेंगाये ।"गरीबों को मिले रोटी तो मेरी जान सस्ती है । " यह नारा सरदार भगत सिंह और उनके साथी सुखदेव ने लगाया था ।

बस्ती से जब मैं चला था तो मुझसे जनता ने कहा था कि इस देश को बचाइये। हमारे खाद्य मंत्री जी यहां बैठे हुए हैं, इन का इकबाल बहुत बुलन्द है, मैं उनसे कहना चाहता हूं कि ठीक वक्त पर पानी किसानों को भिजवाइये, राजस्तान में पानी भिजवाइये । आप काफी सीनियर मिनिस्टर हैं इसलिए आप पर बड़ी जिम्मेदारी है । बाढ़ से हमारी जान आप बचाइये । हमारी गरीब जनता दुखी है । मलेरिया वहां फैला हुआ है, आदमी मर रहे हैं, दवादारू का कोई इंतजाम नहीं है । इसलिए मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि आप तत्काल रिलीफ मुनासिब तौर पर दीजिये । जहां तक आप कहेंगे हम लोग सहयोग करने के लिए तैयार हैं । मैं सरकार को सावधान करना चाहता हूं कि समय पर समुचित प्रबन्ध किया जाय ।

अन्त में मैं इन्हें धन्यवाद दूंगा ।

समापति महोदय श्री प्रकाशवीर शास्त्री ।

श्री कामेश्वर सिंह : सभापति महोदय, सिलसिलेवार बुलाइये ।

सभापति महोदय : जो लोग अनअटेन्ड हैं उनको भी तो बुलाना चाहिये ।

SHRI B. K. DASCHOWDHURY: My name is there on the Order Paper itself.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (हापुड़) सभापति जी, सन् 1947 से जब से यह देश स्वतंत्र हुआ है आज 1969 तक कोई वर्ष ऐसा व्यतीत नहीं हुआ है कि जिस वर्ष में इस देश के विभिन्न राज्यों के अन्दर बाढ़ न आयी हो, और बाढ़ से अरबों रुपयों की तबाही न हुई हो । जब भी बर्षा ऋतु आती है और संसद का अधिवेशन होता है तो यह निश्चित है कि उस में बाढ़ के ऊपर चर्चा आती है बाढ़ रोकने के आश्वासन भी दिये जाते हैं लेकिन अगले वर्ष जब वर्षा ऋतु आयेगी फिर भी उसी प्रकार की चर्चायें और फिर उसी प्रकार से बाढ़ों का आना, यह सिलसिला भी जारी रहेगा ।

मैं आपके द्वारा माननीय सिंचाई मंत्री महोदय से स्पष्ट रूप से जानना चाहता हूं कि क्या सिंचाई मंत्रालय के पास इस प्रकार के आंकड़े हैं कि पिछले 22 वर्षों में देश के विभिन्न राज्यों में जो बाढ़ आई है उससे कितने अरब या कितने खरब रुपयों की हानि इस देश को हुई है ? और जितने रुपयों की हानि हुई उसका आधा रुपया भी अगर इन नदियों और किनारों को रोकने पर खर्च कर दिया जाता तो हिन्दुस्तान में बाढ़ की समस्या का समाधान कई वर्ष पहले हो सकता था ।

18.15 hrs.

अगर अबतक नहीं किया गया तो मैं चाहता हूं कि कम से कम आगे के लिए इस सम्बन्ध

में कोई योजना अवश्य बनाई जाय । इस योजना के दो प्रकार हो सकते हैं । एक प्रकार यह है कि जो छोटी नदियों के किनारे हैं, जिन पर बहुत बड़ी राशि व्यय नहीं करनी पड़ेगी, अगर सरकार के पास अधिक राशि नहीं है तो पहले उन को वह प्राथमिकता दे। अगर सरकार के पास बड़ी राशि है तो सिद्धान्त रूप में यह तय कर लेना चाहिये कि जो बड़ी नदियां हैं, जिनसे बड़ी हानि होती है, उनको प्राथमिकता देंगे । लेकिन कोई योजना अवश्य बननी चाहिये जिस आधार पर बाढ़ को रोका जा सके । एक वर्ष बाद सिंचाई मंत्री यहां पर सदन को बतलायें कि पिछले वर्ष में हमने बाढ़ पर इतने प्रतिशत सफलता प्राप्त की, और इतने नदियों की बाढ़ के इलाकों को हम ने नदियों से प्रभावित होने से रोका ।

दूसरी बात विशेष रूप से मैं कहना चाहता हूं कि दुनियां में बाढ़ को रोकने का एक विशेष प्रकार है । लेकिन हमारे देश में दुर्भाग्यवश बाढ़ नियन्त्रण योजना के बारे में सिंचाई मंत्रालय और दूसरे मंत्रालयों में किसी प्रकार का ताल मेल नहीं है । कई देश इस प्रकार के हैं जहां नदियों के किनारे बांध बनाये जाते हैं और उनके ऊपर रेलवे लाइनें निकाली जाती हैं । इससे यह होता है कि हर साल वर्षों के अवसर पर बांधों की रक्षा होती रहती है और दोहरा काम होता है एक तो रेलों की यात्रा और दूसरे बांधों की रक्षा । हमारे यहां कई स्थान इस प्रकार के है जहां बांध भी बन सकते हैं और रेलवे लाइन भी निकल सकती हैं लेकिन रेलवे मंत्रालय से इस विभाग का कोई ताल मेल नहीं है । जिससे नई रेल लाइनें निकाली जा सकतीं । न ही परिवहन विभाग से है जिससे उन क्षेत्रों में सड़कें निकाली जा सकतीं और न बांधों की बराबर हर प्रकार की देख रेख हो सकती । इस तरह से बाढ़ नियन्त्रण योजना बीच में ही खटाई में पड़ गई है ।

उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में पिछले बीस-बाइस वर्षों से बहुत अधिक बाढ़ आती रही हैं । मेरे पास इस समय सिंचाई मंत्री का एक वक्तव्य है जिसमें उन्होंने विभिन्न राज्यों के अन्दर बाढ़ों की स्थिति का परिचय दिया है । कुछ दिन पहले इसी प्रकार का एक अल्प सूचना प्रश्न भी था । अभी कुछ दिन पूर्व मुरादाबाद जिले में गंगा की बाढ़ से जो तबाही हुई है न केवल मुरादाबाद बल्कि बदायूं और बुलन्दशहर जिलों के भी जो भाग उससे प्रभावित हुए है उनको देखने के लिए सिंचाई मंत्री महोदय और सैंट्रल वाटर पावर कमिशन के चेअरमेन, श्री नरसिंहम दोनों पहुंचे थे । इस बार स्थिति यह है कि 300 गांवों के क्षेत्र में पानी भरा हुआ है, कच्चे घर जितने थे उनमें आधे से ज्यादा बैठ चुके हैं । एक फसल बराबर पिछले 23 सालों से तबाह हो रही है लेकिन कोई स्थायी प्रबन्ध नहीं हो सका उसका । दिल्ली की नाक के नीचे मेरठ जिला है । वहां पर भी इसी प्रकार योजनाओं में ताल मेल न होने से पानी रुका हुआ है । जो नाले इस प्रकार के थे कि बाढ़ के पानी को लाकर गंगा में डालते थे, उनकी सफाई न होने से सारे का सारा पानी खेतों में फैला हुआ है। करोड़ों रुपयों की फसल तबाह और बरबाद हो गई है । इसलिए मैं आपके माध्यम से सिंचाई मंत्री से कहूंगा कि वह बाढ़ के नियन्त्रण के लिए कोई योजना बनायें, और हर वर्ष अपनी सफलता की सूचना मंत्री महोदय संसद को दें कि इस बार हमने इतनी सफलता प्राप्त की । आप एक ऐसी योजना बनायें तो पांच साल में, दस साल में या पन्द्रह साल में इस देश में बाढ़ पर पूरी तरह से नियन्त्रण हो जायेगा । इस तरह की कोई योजना सिंचाई मंत्री अवश्य संसद् को दें ।

श्री स० मो० बनर्जी : आज सुबह जब मैंने उत्तर प्रदेश के मामले को उठाया तो अध्यक्ष महोदय ने कहा कि उन्होंने मेरी

[श्री स० मो० बनर्जी]

पत्र को होम मिनिस्टर को भेज दिया । म कहना चाहता हूं कि जो कुछ भी वहां से आया हो उसको सदन के सामने रखा जाय । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यू० पी० की स्थिति को यहां आज ही रखा जाय ।

सभापति महोदय : होम मिनिस्टर साहब का स्टेटमेंट है कि यू० पी० से कोई रिपोर्ट उन के पास नहीं आई है । इस वजह से वह आज स्टेटमेंट नहीं दे सकते ।

SHRI S. M. BANERJEE: May I take it there is no news from Lucknow? (Interruptions).

SHRI JYOTIRMOY BASU (Diamond Harbour): This is a deplorable situation. Lucknow is within a direct dialling distance of Delhi. How on earth can the Home Minister say such a thing and you accept it? They are giving cock and bull stories.

श्री मु० अ० खां (कासगंज): सभापति महोदय, हिन्दूस्थान के फ्लड्स हम लोगों के लिए एक बहुत बड़ा मसला बन गये हैं । इस मुल्क में हर साल गारतगिरी और तूफान बरपा होता है । बराबर इसकी तरफ सरकार की तवज्जह दिलाई जाती रही है कि इन तूफानों और तुगियानियों से लाखों इन्सानों और जानवरों की जानें जाया होती हैं । लाखों इन्सान और जानवर बेघर हो जाते हैं । उनके खाने और रहने का कोई सहारा नहीं रह जाता है । यह देश के लिए और देश की सरकार के लिए बड़ी शर्मनाक बात हैं । अब तक इन बाढों से जितना नुकसान हुआ है, तूफानों से जितना नुकसान हुआ है, तुगियानी से जितना नुकसान हुआ है, सैलाब से जितना नुकसान हुआ है, उस सारे नुकसान का अगर एक चौथाई रुपया भी इसको रोकने पर खर्च किया जाता तो इस नुकसान से बचा जा सकता था । हर साल हजारों इन्सानों की जानें जाती हैं, लाखों मवेशी मारे जाते हैं, बह जाते हैं । करोड़ों रुपये की फसल बरबाद हो जाती है लेकिन फिर भी हमको बताया जाता सवालों के जवाब में कि हमारे पास पैसा नहीं है कि हम इन बाढों की रोकथाम कर सकें । कितनी यह खराब बात है, कितनी यह बुरी बात है । इन्सानों की जानें जाती हैं, जानवरों की जाने जाती हैं, लाखों आदमी बेघर बार हो जाते हैं, बेकार हो जाते हैं, करोड़ों की उनकी फसल नष्ट हो जाती है लेकिन हमारे मंत्री महोदय कहते है कि हमारे पास रुपया नही है । मुख्तलिफ कामों में जहां जरूरत नहीं होती है वहां तो रुपया खर्च कर दिया जाता है लेकिन इस जरुरी काम के लिए कहा जाता है कि हमारे पास रुपया नहीं है ।

एक और चीज है जिस की तरफ मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं । आप देखे कि गंगा बहती है और उसके दो किनारे होते हैं, एक दक्षिणी किनारा और एक उत्तरी किनारा । इसके बारे में मैंने सवाल भी किया था लेकिन मिनिस्टर साहब कोई जवाब नहीं दे सके । अब अगर दक्षिण की तरफ से गंगा बाढ़ के वक्त अपने साहिल को काटना शुरु कर दे तो ऐसा होता है कि गांवों के गांवों को वह काट देती है और जमीन कट कर उत्तर के किनारे की तरफ हुंचया जाती है । वह जमीन जो दरिया छोड़कर आता है वह काबिले काश्त होती है । मुझे हैरानी है कि इस बात पर बीस साल में न तो सैंट्रल गवर्नमेंट कोई कानून बना सकी है और न ही कोई प्रदेश की सरकार कानून बना सकी है कि वह जमीन जो कटने के बाद दरिया छोड़-कर आता है वह किसकी प्रापर्टी है । ऐसा मालूम होता है कि वह नो मैंज लैंड है, जिसकी लाठी उसकी भैंस का कानून वहां चलता है । जिनकी वह जमीन होती है वे बेचारे भूखों मरते हैं, भीख मांगते फिरते हैं, हजारों की तादाद में झोपड़ियां

बना कर उनमें बस जाते हैं । सरकार को चाहिए कि वह गौर करे कि कटने के बाद जो जमीन दरिया छोड़कर आता है, उसका प्रबन्ध कौन करे, वह जमीन किस की हो ।

सभापति महोदय : यह विषय अगले सत्र में चलेगा और चीनी के मामले पर भी तब बहस होगी । अब अनिश्चित काल के लिए यह सभा स्थगित की जाती है ।

18.23 hrs.

The Lok Sabha then adjourned sine die.

GMGIPND—LS II—2051 (ai) LS—2-1-70—1010.